शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रतिवेदन–सत्र–2013–14

प्रभारी

डॉ. शंकर मुनि राय

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रतिवेदन–सत्र–2013–14

संस्कृत साहित्य परिषद का उद्घाटन

12 सितंबर 2013 को प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह के मार्गदर्शन में प्रावीण्य सूची के आधार पर गठित संस्कृत साहित्य परिषद का उद्घाटन महाविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष और नगर के समाज सेवी श्री अशोक चौधरी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। विभाग के प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने बताया कि सत्र 2013–14 के लिए गठित इस परिषद में पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं–अध्यक्ष : श्रीमती चंद्रप्रभा साहू, उपाध्यक्ष : कुमारी कविता साहू, सचिव : कुमारी सुभिया वर्मा, और सह सचिव : श्री गजानन वर्मा।

परिषद के कार्यकारी सदस्यगण के नाम इस प्रकार हैं–कुमारी नसीमा बानो, कुमारी हिमांता रकटाटे, कुमारी अंजली पाण्डेय, श्री रविकुमार लहरे, श्री रूपेश साहू, श्री नेमीचंद वर्मा, श्री भीषम लाल, श्री यदेश्वर कुमार, कुमारी प्रियंका सिवारे, कुमारी शिखा मिश्रा और कुमारी हेमकुमारी साहू।

उद्घाटन के अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर एन. सिंह ने परिषद के पदाधिकारियों सहित सदस्यों को शुभकामनाएं दीं। साथ ही आपने परिषद के पदाधिकारियों से कहा कि वे सत्र के साहित्यिक कलेण्डर का पालन करते हुए विभाग में अन्य आयोजन भी करते रहें।

संस्कृत में नेट–परीक्षा के लिए कार्यशाला

दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में नेट परीक्षा की तैयार बावत एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ कालेज, रायपुर के प्राध्यापक डॉ. सत्येन्दु शर्मा विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित थे। डॉ. शर्मा ने प्रारंभ में महाविद्यालय द्वारा आयोजित इस नेट विषयक कार्यशाला को प्रासंगिक दृष्टि बताया। आपने कहा कि छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखकर इस तरह की योजनाएं बहुत कम संस्थाएं बना पाती हैं।

विषय विशेषज्ञ डॉ. शर्मा ने कार्यशाला के प्रथम चरण में संस्कृत विषय की नेट परीक्षा के पुराने प्रश्नपत्रों के आधार पर विद्यार्थियों से बातचीत की तथा परीक्षा पैटर्न की जानकारी दी। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का इकाईवार विभाजन कर उनसे पूछे जानेवाले प्रश्नों की संभावित सूची तैयार करकर आपने योजनाबद्ध तैयारी के तरीके बताये। पिछली परीक्षा में जो परीक्षार्थी भाग लिये

थे और सफल नहीं हो पाये थे, उन्हें दोगुने उत्साह और लगन के साथ परीक्षा की तैयारी करने के संदेश दिये।

कार्यशाला के अंत में डॉ. शर्मा ने विद्यार्थियों को लिखित परीक्षा सामग्री प्रदान कर उनका उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम के प्रारंभ में विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने विषय विशेषज्ञ का परिचय संस्कृत में कराया तथा डॉ. बालकराम चौकसे ने विभाग की ओर से आभार प्रकट किये।

छत्तीसगढ़ में संस्कृत विश्वविद्यालय की मांग

02 सितंबर 2013 : दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन माननीय श्री खुबचंद पारख के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी (अध्यक्ष संस्कृत भारती, रायपुर) ने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश में संस्कृत विश्वविद्यालय खुलना चाहिए तथा वेदों के अध्ययन के प्रति विद्यार्थियो की रूचि बढ़ानी चाहिए। इस आयोजन में विशेष अतिथि के रूप में बिलासपुर से पधारे थे संत आचार्यश्री अंशुदेव महाराज।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि बगैर किसी नियमित संस्कृत प्राध्यापक के यह संस्था विगत पांच वर्षो

से अपने स्तर से शिक्षक नियुक्त कर अध्यापन कार्य करा रही है। यद्यपि यहां अध्ययन अध्यापन का माध्यम हिन्दी है पर हमारी कोशिश है कि विद्यार्थियों को संस्कृत का व्यावहारिक ज्ञान हो। हमारे विद्यार्थी संस्कृत को अपने ज्ञान के साथ–साथ व्यावहार की भाषा बनाये, इसलिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

मुख्य अतिथि श्री खुबचंद पारख ने कहा कि सभी भाषाओ को सीखना अध्ययन है। पर अपनी मूल भाषा को भूल जाना शिक्षा का अवमूल्यन है। इस अर्थ में संस्कृत के विद्यार्थियों को चाहिए कि वे संस्कृत को अपने व्यावहारिक ज्ञान के साथ–साथ जीवन की भाषा बनायें। उन्होंने आगे कहा कि आज बड़ी रकम खर्च करके इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करनेवाला युवक भले बेरोजगार हो जाय, पर संस्कृत का विद्यार्थी बेरोजगार नहीं हो पा रहा है।

बिलासपुर से पधारे विशेष अतिथि आचार्य अंशदेव महाराज ने अपने संबोधन में इस संस्था के विद्यार्थियों के संस्कृत ज्ञान की सराहना की। आपने कहा कि भारत के लिए चिता की बात है कि जिस संस्कृत को सीखने के लिए विदेशी यहां आ रहे हैं, उसी संस्कृत को यहां जटिल समझ कर टाल दिया जाता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने कहा कि छत्तीसगढ़ में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना होनी चाहिए। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किये कि जिस वेद पर भारतीय संस्कार और संस्कृति अवलंबित है, उसे पाठ्यक्रम में वैकल्पिक स्थान दिया जा रहा है।

संस्कृत नाटिका– इस अवसर पर संस्था के छात्रों द्वारा एक लघु संस्कृत नाटिका का प्रदर्शन भी किया गया। इस नाटिका में प्रमुख भूमिका निभानेवाले छात्र थे– श्री नेमीचंद वर्मा तथा तोषण कुमार। कुमारी नसीमा बानो तथा शुभिया वर्मा ने संस्कृत में अपने अनुभव सुनाये तथा पूरे कार्यक्रम का संचालन छात्रा कुमारी गंगा साहू ने संस्कृत में ही किया।

शिविर के प्रशिक्षक द्वय श्री बंशीधर द्विवेदी तथा श्री राकेश वर्मा सहित समस्त अतिथियों के प्रति विभाग प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने आभार प्रकट किये। इस कार्यक्रम में संस्कृत विभाग के समस्त विद्यार्थियों को भी आमंत्रित किया गया था।

संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी का संबोधन

संस्कृत सप्ताह में संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी तथा वेदपूजा

20 अगस्त 2013 : संस्कृत सप्ताह के अन्तर्गत आज दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित **संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी** का उद्घाटन प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने किया । प्रदर्शनी में भारतीय संस्कृत ग्रंथों में उल्लेखित वैज्ञानिक तथ्यों को संदर्भ सहित दर्शाया गया है।

संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन

प्रदर्शनी के संयोजक डॉ शंकर मुनि राय ने बताया कि प्रदर्शनी का उद्देश्य संस्कृत भाषा में विद्यमान वैज्ञानिक बातों से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। साथ ही इससे संस्कृत भाषा के प्रति लोगों की रूचि भी बड़ेगी। आपने बताया कि इस चित्रमयी प्रदर्शनी में गणित, भौतिक, रसायन, प्राणीशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, खगोलशास्त्र, भूगर्भशास्त्र सहित विज्ञान की अन्यान्य शाखाओं सहित वास्तुशास्त्र और अभियांत्रिकी से जुड़ी बातें उदाहरण सहित दर्शायी गई हैं।

वेदपूजन : संस्कृत सप्ताह में संस्कृत विभाग द्वारा वेदपूजन का आयोजन किया गय। प्राचार्य डॉ. आर एन. सिंह ने विभाग के छात्र–छात्राओं के साथ ग्रंथों की पूजा की। इस अवसर पर आपने अपने संबोधन में कहा कि संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों की खरीदारी कर विभाग कें पुस्तकालय को संवृद्ध किया जाएगा।

वेदपूजा करते प्राचार्य डॉ. आर एन. सिंह

6.

व्याख्यान : संस्कृत में विज्ञान

17 अगस्त 2013 : महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित संस्कृत सप्ताह के दूसरे दिन 'संस्कृत में विज्ञान' विषय पर डॉ. हेम्बर्डे का दो घंटे का रोचक व्याख्यान हुआ। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के निदेशक डॉ. हेम्बर्डे ने इस दौरान पावर प्वाइंट प्रिजेंटेशन के द्वारा संस्कृत ग्रंथों में विद्यमान वैज्ञानिक सूत्रों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

मुख्य वक्ता ने भौतिक, रसायन, भूगोल, खगोल सहित विविध गणितीय सिद्धांतों के उत्स को संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में संदर्भ सहित दर्शाते हुए उनकी व्याख्या की। साथ ही आपने सोदाहरण उल्लेख किया कि किस प्रकार भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अनुसंधान को बाद के पाश्चात्य विद्वानों ने नया रूप दिया है।

डॉ. हेम्बर्डे ने सूर्यग्रहण/चंद्रग्रहण, गुरुत्वाकर्षण, प्रकाशीय वेग, कार्य कारण सिद्धांत, विद्युतीकरण और अभियांत्रिकी, विमानशास्त्र आदि के वैज्ञानिक सूत्र को भारतीय संस्कृत ग्रंथों में सोदहरण प्रस्तुत किये। संस्कृत ग्रंथों में विज्ञान के ऐसे तथ्य को देखते–समझाते हुए महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने काफी पसंद किये।

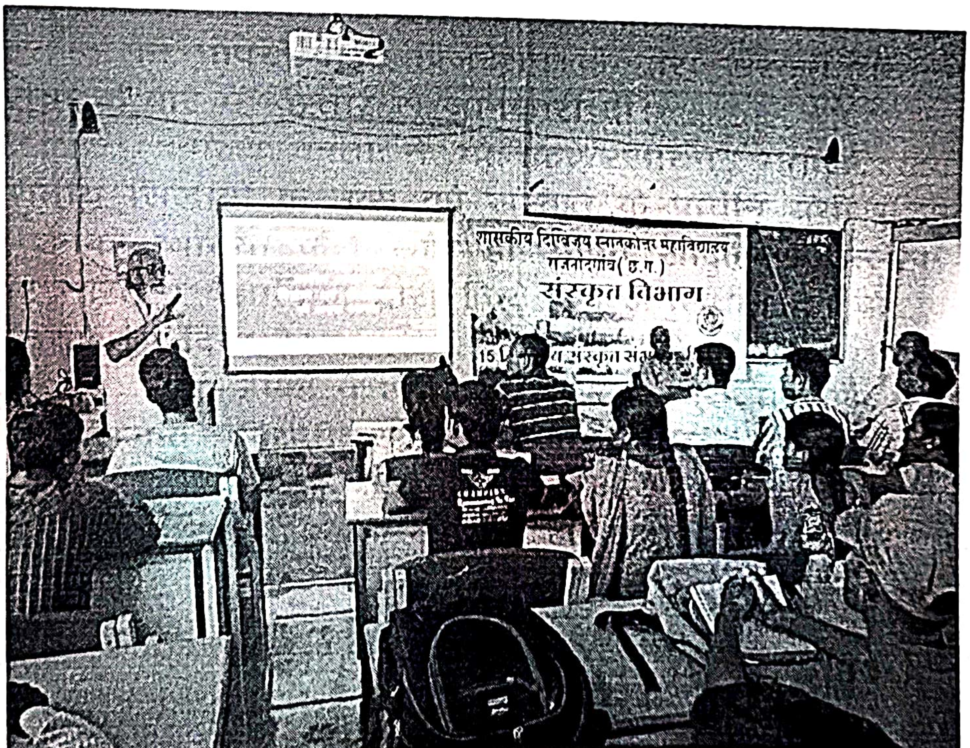

डॉ. हेम्बर्डे द्वारा 'संस्कृत में विज्ञान' पर व्याख्यान

7.

सिर्फ भाषा नहीं, विद्या भी है संस्कृत– डॉ. कौशिक

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित संस्कृत सप्ताह के दूसरे दिन के व्याख्यान में संस्कृत बोर्ड, छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष डॉ. गणेश कौशिक ने संस्कृत को भाषा से अधिक 'विद्या' की संज्ञा दी। आपने कहा कि यह दुनिय की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसे भाषा कम, विद्या अधिक माना जाता है। भारत सहित दुनिया की तमामा भाषाओं में संस्कृत के शब्द बड़ी सुगमता से तलाशे जा सकते हैं।

आपने इसके प्रति उदासीनता का कारण आपने विदेशी संस्कृतियों का आगमन बताया। आपने आगे कहा कि संस्कृत वह भाषा है जिसका इतिहास दुनिया की तमाम भाषाओं के समानान्तर सबसे अधिक लगभग दो हजार वर्ष से भी पुराना है।

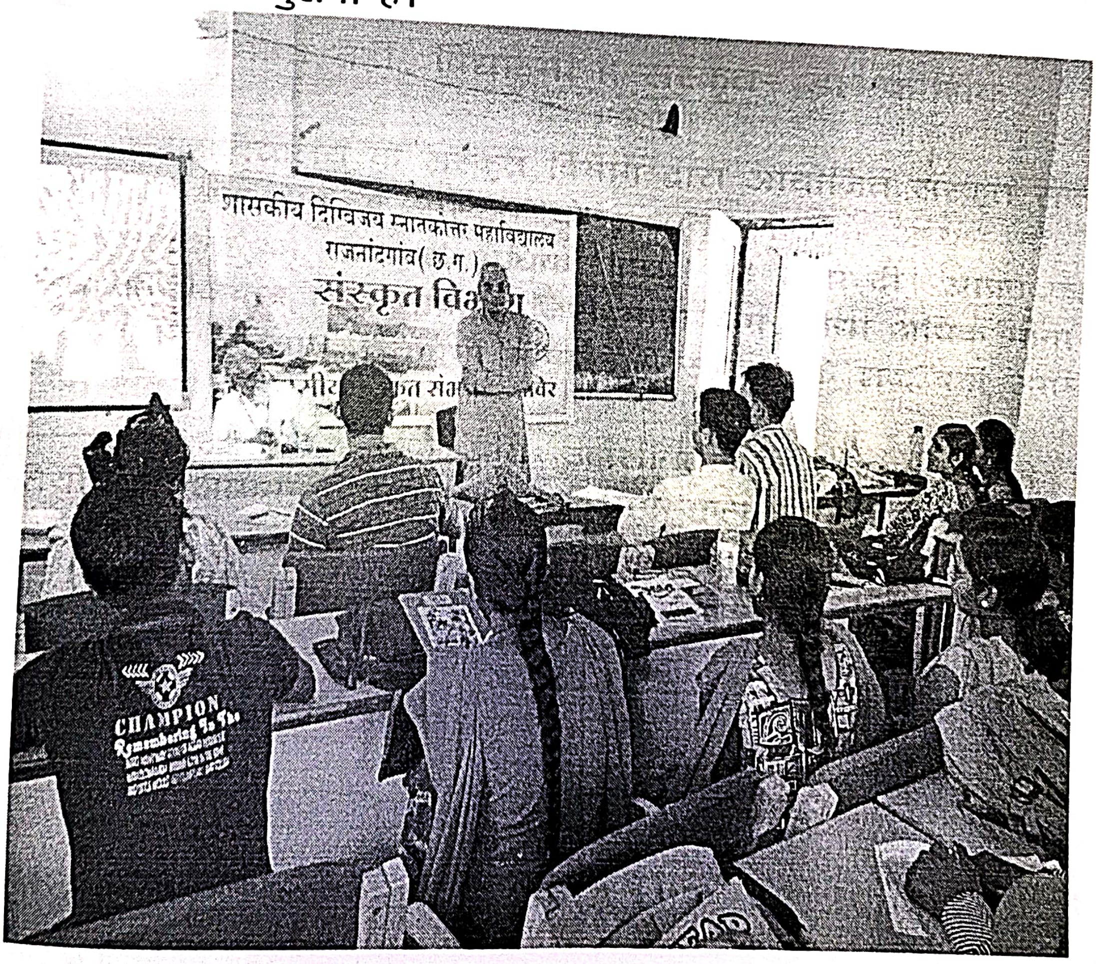

डॉ. कौशिक का व्याख्यान

8.

संस्कृत दिवस पर शोभा यात्रा

16 अगस्त 2013 : संस्कृत दिवस के अवसर पर दिग्विजय महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रैली निकाल कर संस्कृत सप्ताह का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने छात्रों को तिलक लगाकर शुभकामनाएं दी। उसके बाद विभाग के प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के नेतृत्व में छात्र–छात्राओं ने मंत्रोच्चार के साथ परिसर भ्रमण किया। इस दौरान महाविद्यालय के परिसर स्थित श्रीगणेश मंदिर, राधा–कृष्ण मंदिर और हनुमान मंदिर में सामूहिक गेय मंत्रों के साथ पूजा–अर्चना की गई।

उल्लेखनीय है कि यहां संस्कृत विभाग में विगत 12 अगस्त से 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर चल रहा है। शिविर में संस्कृत को व्यावहारिक भाषा का रूप देने के लिए विद्यार्थियों को संस्कृत में वार्त्तालाप की कला सिखाई जा रही है।

संस्कृत शोभा यात्रा

9.

सरस्वती पूजा के अवसर पर, सामूहिक हवन एवं वसंतोत्सव

04 फरवरी 2014: वसंत पंचमी के अवसर पर संस्कृत विभाग में वैदिक रीति से सरस्वती पूजा कर एक साथ हवन किया गया इस अवसर पर विभाग के विद्यार्थियों पूजा–हवन के पश्चात् भजन गायन किये। इस अवसर पर विभाग में वसंतोत्सव को पीले परिधान के साथ स्वगागत किया गया।

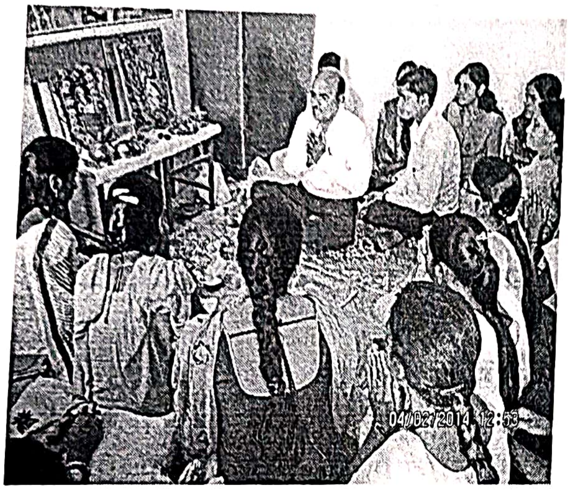

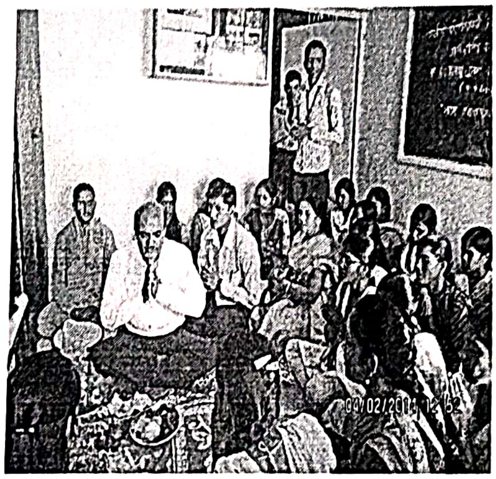

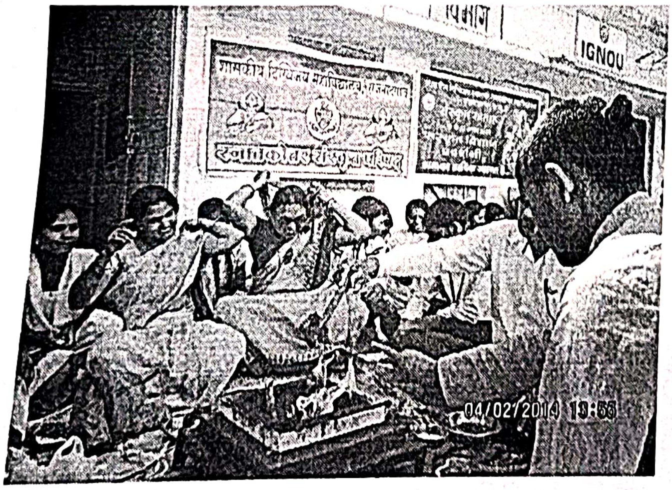

....

(डॉ. शंकर मुनि राय)
प्रभारी, संस्कृत विभाग